Shri Janaki Ashtottarashata Nama Stotram

श्रीजानकी अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Janaki AshTottarashatanama Stotram

File name : jAnakIaShTottarashatanAmastotram.itx

Category : devii, devI, sItA, aShTottarashatanAma, stotra

Location : doc_devii

Proofread by : Raman. M

Description/comments : with Hindi meaning

Latest update : July 31, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 31, 2021

sanskritdocuments.org

Shri Janaki Ashtottarashata Nama Stotram

श्रीजानकी अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

श्रीजानकीचरितामृते अथाष्टाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८८॥

श्रीकिशोरीजीके सहस्र (१०००) नाम श्रवणपूर्वक उनके अष्टोत्तरशत (१०८) नाम तथा द्वादश (१२) नामों को श्रवण करके श्रीमिथिलेशजी महाराजको प्रेम मूर्च्छा तथा नव योगेश्वरों द्वारा उनका पृथक् समाश्वासन ।

श्रीजनक उवाच -

अष्टोत्तरशतं नाम्नामपीदानीं तदुच्यताम् ।
भवद्भिः सानुकम्पं मे सर्वज्ञाः श्रुतिमङ्गलम् ॥ १॥

श्रीजनकजी-महाराज बोले -
हे सर्वज्ञ महर्षियों ! अब आप लोग श्रवणमात्रसे मङ्गल करनेवाले श्रीललीजीके अष्टोत्तरशतनामोंको भी मुझे बतलाने की कृपा करें ॥ १॥

श्रीहरिरुवाच ।

साधुं पृष्टं त्वया राजन् श्रव्यमेकाग्रचेतसा ।
अष्टोत्तरशतं वक्ष्ये नाम्नां परमपावनम् ॥ २॥

श्रीहरिनामके योगेश्वर बोले -
हे राजन् ! आपका प्रश्न बहुत अच्छा है अत एव मैं श्रीललीजीके परमपावन अष्टोत्तरशतनामों का वर्णन करता हूँ आप उसका एकाग्रचित्तसे श्रवण कीजिये ॥ २॥

सीरध्वजसुता सीता स्वाश्रिताभीष्टदायिनी ।
सहजानन्दिनी स्तव्या सर्वभूताशयस्थिता ॥ ३॥

१ सीरध्वजसुता - श्रीसीरध्वजमहाराज के सुखका विस्तार करनेवाली ।
२ सीता - अपने आश्रित चेतनों के समस्त दुःख शोकोंकी मूल आसुरी सम्पत्तिका विनाश करके दया, क्षमा, वात्सल्य, सौशील्य आदि दैवी सम्पत्तिके विस्तार द्वारा अनायास संसार-सागरसे पार उतारनेवाली ।

३ स्वाश्रिताभीष्टदायिनी - अपने आश्रितोंकी हितकर इच्छाओंको पूर्ण करनेवाली ।
४ सहजानन्दिनी - अपने शीलस्वभाव और गुणरूप आदिसे सभी, जड़ चेतनोंको स्वाभाविक आनन्द प्रदान करनेवाली ।
५ स्तव्या - सभीके द्वारा सब प्रकारसे स्तुति करने योग्या ।
६ सर्वभूताशयस्थिता - सम्पूर्ण प्राणियोंके हृदयों में निवास करनेवाली ॥ ३॥

ह्लादिनी क्षेमदा क्षान्तिः षडर्द्धाक्षहृदिस्थिता ।
श्रीनिधिः श्रीसमाराध्या श्रियः श्रीः श्रीमदर्चिता ॥ ४॥

७ ह्लादिनी - सम्पूर्ण चेतनाके हृदयमें आह्लाद प्रदान करनेवाली ।
८ क्षेमदा - कल्याण प्रदान करनेवाली ।
९ क्षान्ति - सहनशीलता-स्वरूपा ।
१० षडर्द्धाक्षहृदिस्थिता - त्रिनेत्रधारी (भगवान् शिवजी) के हृदयमें निवास करनेवाली ।
११ श्रीनिधिः - सम्पूर्ण शोभा कान्ति तथा धनकी भण्डार-स्वरूपा ।
१२ श्रीसमाराध्या - श्रीलक्ष्मीजीके द्वारा सम्यक् प्रकारसे सेवित होने योग्य ।
१३ श्रियः श्रीः - कान्तिकी कान्ति और शोभाकी शोभा-स्वरूपा ।
१४ श्रीमदर्चिता - तेज और सम्पत्तिशाली ब्रह्मादि देव वृन्दोंसे पूजित ॥

शरण्या वेदनिःश्वासा वैदेही विबुधेश्वरी ।
लोकोत्तराम्बा लोकादी रघुनन्दनवल्लभा ॥ ५॥

१५ शरण्या - सभी प्राणियोंकी सब प्रकार से रक्षा करनेमें पूर्ण समर्थ ।
१६ वेदनिःश्वासा - वेदमय श्वासवाली ।
१७ वैदेही -श्रीविदेहकुलकी सर्वोत्कृष्ट राजदुलारी ।
१८ विबुधेश्वरी - ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अग्नि, सूर्य, पवन, यम, कुबेर, इन्द्रादि सभी देवताओं पर शासन करनेवाली ।
१९ लोकोत्तराम्बा - सम्पूर्ण प्राणियोंकी अपाञ्चभौतिक (दिव्य) माता ।
२० लोकादिः - समस्त लोकों की कारण-स्वरूपा ।
२१ रघुनन्दनवल्लभा - रघुकुलको वात्सल्य जनित आनन्द प्रदान करनेवाले भगवान् श्रीरामजीकी परम प्यारी ॥ ५॥

रम्यरम्यनिधी रामा योगेश्वरप्रियात्मजा ।
यज्ञस्वरूपा यज्ञेशी योगिनां परमा गतिः ॥ ६॥

२२ रम्यरम्यनिधिः - सभी सुन्दरों में सुन्दर (भगवान् श्रीरामचन्द्र सरकार) की निधि-स्वरूपा (भण्डार-स्वरूपा) ।
२३ रामा - आकाश तत्त्व सहस्त्रां गुणा अत्यन्त सूक्ष्म होनेके कारण सम्पूर्ण प्राणियों को अपनी गोदमें खेलानेवाली और स्वयं विविध प्रकारके स्थूल सूक्ष्मादि रूपोंके द्वारा सबके साथ खेलनेवाली भगवान श्रीरामजी की प्राणवल्लभा ।
२४ योगीश्वरप्रियात्मजा - योगियों पर शासन करनेवाले श्रीमिथिलेशजी महाराजकी प्यारी पुत्री ।
२५ यज्ञस्वरूपा - यज्ञ स्वरूपवाली ।
२६ यज्ञेशी - समस्त यज्ञोंकी रक्षा करनेवाली ।
२७ योगिनां परमा गतिः - भगवत्-प्राप्तिके साधकोंका सब प्रकारसे सम्हाल करनेवाली ॥ ६॥

मृदुस्वभावा मृदुला मैथिली मधुराकृतिः ।
मनोरूपा महेज्येज्या महासौभाग्यदायिनी ॥ ७॥

२८ मृदुस्वभावा - अत्यन्त कोमल स्वभाववाली ।
२९ मृदुला - कोमल स्वभाव तथा अति कोमल अङ्गोवाली ।
३० मैथिली - मिथिवंशमें सबसे अधिक प्रख्यात श्रीमिथिलेशराज-दुलारीजी ।
३१ मधुराकृतिः - अत्यन्त मनोहर तथा सर्वानन्दप्रदायक सुन्दर स्वरूपवाली ।
३२ मनोरूपा - मनके स्वरूपवाली ।
३३ महेज्येज्या - महान पूजनीय श्रीब्रह्मा, विष्णु, महेशादि देव तथा उमा, रमा ब्रह्माणी आदि महाशक्तियोंके द्वारा भी पूजने योग्य ।
३४ महासौभाग्यदायिनी - भक्तोंको सर्वोत्तम सौभाग्य प्रदान करनेवाली ॥ ७॥

भूमिजा बुधमृग्याङ्घ्रिकमला बोधवारिधिः ।
फलस्वरूपा तपसां फणीन्द्रवर्ण्यवैभवा ॥ ८॥

३५ भूमिजा - पृथ्वी से प्रकट होनेवाली श्री मिथिलेशराज-दुलारी जी ।
३६ बुधमृग्याङ्घ्रिकमला - ज्ञानियों के खोजने योग्य जिनके एक श्रीचरण-कमल ही है ।
३७ बोधवारिधिः - समुद्र के समान अथाह ज्ञानवाली ।
३८ फलस्वरूपा तपसाम् - सम्पूर्ण तपोंके फल (भगवत्प्राप्ति) स्वरूपवाली ।
३९ फणीन्द्रवर्ण्यवैभवा - सहस्त्रमुखवाले (दो हजार जिह्वा) श्रीशेषजी

द्वारा भी जिनका ऐश्वर्य वर्णन करने असम्भव है ॥ ८॥

नमस्या प्रियदृष्टिश्च धरारत्नं धरासुता ।
दिव्यात्मा दीप्तमहिमा तत्त्वात्मा जनकात्मजा ॥ ९॥

४० नमस्या - समस्त प्राणियों के लिये एकमात्र नमस्कार भाजन ।
४१ प्रियदृष्टिः - प्रियदर्शनवाली
४२ धरारत्नम् - पृथ्वीकी सर्वोत्कृष्ट रत्न-स्वरूपा ।
४३ धरासुता - पृथिवीके सुखसमूह का विस्तार करनेवाली ।
४४ दिव्यात्मा - अलौकिक बुद्धिवाली ।
४५ दीप्तमहिमा - विख्यात प्रभाववाली ।
४६ तत्त्वात्मा - तत्त्व (ब्रह्म) स्वरूपवाली ।
४७ जनकात्मजा - श्रीजनक वंशमें सर्वोत्तम महिमावाली, श्रीसिरध्वजराजकुमारीजि ॥ ९॥

जगदीशपरप्रेष्ठा ज्ञानिनां परमायनम् ।
जगन्मङ्गलमाङ्गल्या जरामृत्युभयातिगा ॥ १०॥

४८ जगदीशपरप्रेष्ठा - सचराचर प्राणियों पर शासन करनेवाले ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र, यम आदि से उत्कृष्ट दिव्यधामाधिप भगवान् श्रीरामजीकी परम प्यारी ।
४९ ज्ञानिनां परमायनम् - ज्ञानियों के चित्त वृत्तिके लिये सर्वोत्तम स्थान-स्वरूपा ।
५० जगन्मङ्गलमाङ्गल्या - चर-अचर प्राणियोंके मङ्गलका भी मङ्गल-स्वरूपा ।
५१ जरामृत्युभयातिगा - बुढापा और मृत्युके भयसे पार करनेवाली ॥ १०॥

चन्द्रकलामुखासाद्या चिदानन्दस्वरूपिणी ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहा चन्द्रबिम्बोपमानना ॥ ११॥

५२ चन्द्रकलामुखासाद्या - रूपेश्वरी श्रीचन्द्रकलाओं के द्वारा सुखपूर्वक प्राप्त होने के योग्य ।
५३ चिदानन्दस्वरूपिणी जिसका सब कुछ चेतन एवं आनन्दमय है, उस ब्रह्म की साकार स्वरूपवाली ।
५४ चतुरात्मा - मन, बुदि, चित्त और अहंकार - इन चार स्वरूपोवाली ।
५५ चतुर्व्यूहा - श्रीभरत, लक्ष्मण, शतृघ्न इन तीनों भाइयोंके समेत चार शरीरवाले श्रीराम-चन्द्र सरकार की पटरानीजी ।

५६ चन्द्रबिम्बोपमानना - शरद् ऋतुके पूर्णचन्द्र के बिम्बके समान उज्ज्वल प्रकाशमय, परम आह्लादकारी श्रीमुख-छटावाली ॥ ११॥

घनश्यामात्मनिलया गोघ्री गुप्ता गुहेशया ।
गेयोदारयशःपङ्क्तिर्गतैश्वर्यकृतस्मया ॥ १२॥

५७ घनश्यामात्मनिलया - सजल मेघोंके सदृश श्यामवर्ण श्रीराघवेन्द्र सरकारके हृदयमें निवास करनेवाली ।
५८ गोघ्री - समस्त चर-अचर प्राणियोंकी रक्षा करनेवाली ।
५९ गुप्ता - भक्तोंके हृदय रूपी कुञ्जमें छिपी हुई ।
६० गुहेशया - प्राणियोंके हृदय रूपी गुफामें परमात्मस्वरूपसे शयन करनेवाली ।
६१ गेयोदारयशः पंक्तिः - गान करने योग्य यश-समूहवाली ।
६२ गतैश्वर्यकृतस्मया - अपने अनुपम ऐश्वर्यके अभिमानसे अछूती ॥ १२॥

गमनीयपदासक्तिः खलभावनिवारिणी ।
कृपापीयूषजलधिः कृतज्ञा कृतिसाधनम् ॥ १३॥

६३ गमनीयपदासक्तिः - आसक्ति प्राप्त करने योग्य श्रीचरण कमलवाली ।
६४ खलभावनिवारिणी - अहित कर भावनाको भगा देनेवाली ।
६५ कृपापीयूषजलधिः - समुद्रके समान अथाह कृपा रूपी अमृतवाली ।
६६ कृतज्ञा - जीवोंके कभीके भी किये हुये किञ्चितभी पूजन, वन्दन स्मरण तथा अर्पण आदि कर्म को, कभी भी न भूलनेवाली ।
६७ कृतिसाधनम् - भगवत् प्राप्तिके पुरुषार्थकी साधनस्वरूपा ॥ १३॥

कल्याणप्रकृतिः काम्या कल्याणी कामवर्षिणी ।
कारुण्यार्द्रविशालाक्षी कम्बुकण्ठी कलानिधिः ॥ १४॥

६८ कल्याणप्रकृतिः - मङ्गलकारी स्वभाववाली ।
६९ काम्या - पूर्ण कामोंके लिये भी, प्राप्तिकी इच्छा करने योग्य ।
७० कल्याणी - कल्याण-स्वरूपा ।
७१ कामवर्षिणी - भक्तोंकी हितकर इच्छाओंकी वर्षा करनेवाली ।
७२ कारुण्यार्द्रविशालाक्षी - दया-भावसे द्रवित कमल के समान विशाल नेत्रोंवाली ।
७३ कम्बुकण्ठी - शंखके समान रेखाओंसे युक्त मनोहर कण्ठवाली ।
७४ कलानिधिः - समस्त विद्याओंकी भण्डार-स्वरूपा ॥ १४॥

केलिप्रिया कलाधारा कल्मषौघनिवारिणी ।
ॐ शब्दवाच्या ह्योजोऽब्धिरुदितश्रीरुदारधीः ॥ १५॥

७५ केलिप्रिया - भक्त-सुखद लीलाओंमें प्रेम रखनेवाली ।
७६ कलाधारा - समस्त विद्याओंकी आधार-स्वरूपा ।
७७ कल्मषौघनिवारिणी - स्मरण करनेवालोंके पापसमूहोंको भगा देनेवाली ।
७८ ॐ शब्दवाच्या - ॐ शब्दसे वर्णन करने योग्य ।
७९ ओजोऽब्धिः - समुद्रके समान अथाह बल पराक्रमवाली ।
८० उदितश्रीः - जो वेदशास्त्रों के द्वारा गाई हुई है एवं कण-कण पत्ती पत्तीसे जिनकी स्वयं शोभा कान्ति तथा ऐश्वर्य प्रकट है ।
८१ उदारधीः - जिनकी बुद्धि, किसी मी असम्भवको सम्भव करनेमें कभी संकोचको प्राप्त नहीं होती ॥ १५॥

उदारकीर्त्तिरुदिता ह्युदारातुल्यदर्शना ।
इष्टप्रदेभगमना आदिजाऽऽह्लादिनी परा ॥ १६॥

८२ उदारकीर्त्तिः - सर्वाभीष्टदायक यशवाली ।
८३ उदिता - सभी वेद शास्त्र, पुराण संहिताओंके द्वारा जिनका वर्णन किया गया है ।
८४ उदारातुल्यदर्शना - धर्म, अर्थ, काम, मोक्षदायक अनुपम मनोहर दर्शनवाली ।
८५ इष्टप्रदा - भक्तोंको मनोवाञ्छित सिद्धि प्रदान करनेवाली ।
८६ इभगमना - गजराजके समान मनोहर चाल से चलनेवाली ।
८७ आदिजा - सबसे पहिले प्रकट होनेवाली ।
८८ आह्लादिनी परा - आह्लाद प्रदायिका सभी शक्तियों में सर्वोत्तम ॥ १६॥

आश्रितवत्सलाऽऽराध्या ह्यनिर्देश्यस्वरूपिणी ।
अद्वितीयसुखाम्भोधिरव्याजकरुणापरा ॥ १७॥

८९ आश्रितवत्सला - अपने आश्रितोंके अपराधों पर ध्यान न देकर उनके हितमें सदैव तत्पर रहनेवाली ।
९० आराध्या - सब प्रकारसे, सभीके उपासना करने योग्य ।
९१ अनिर्देश्यस्वरूपिणी - इदमित्थ (ऐसा ही है यह) निश्चय न कर सकने योग्य स्वरूपवाली ।
९२ अद्वितीयसुखाम्भोधिः - समुद्र के समान अनुपम, असीम अथाह सुखवाली।
९३ अव्याजकरुणापरा - प्रत्येक प्राणीके प्रति विना किसी स्वार्थ भावनाके ही

कृपा करने में तत्पर रहनेवाली ॥ १७॥

अनवद्याऽप्रमत्तात्मा अनन्तैश्वर्यमण्डिता ।
अमानाऽयोनिजाऽकोपा अविचिन्त्याऽनघस्मृतिः ॥ १८॥

९४ अनवद्या - सब प्रकार प्रशंसा योग्य ।
९५ अप्रमत्ता - भक्तोंकी सुरक्षामें सदा पूर्ण सावधान रहनेवाली ।
९६ अनन्तैश्वर्यमण्डिता - असीम (ब्रह्मके) ऐश्वर्यसे विभूषित ।
९७ अमाना - आदि, अन्त, मध्य आदि ताप-तोलसे रहित ।
९८ अयोनिजा - विना किसी कारण अपनी भक्त-भाव पूरिणी इच्छासे प्रकट होनेवाली ।
९९ अकोपा - वध योग्य अपराधी जीवों पर भी क्रोध न करनेवाली ।
१०० अविचिन्त्या - भगवान श्रीरामजीके स्वयं चिन्तन करने योग्य ।
१०१ अनघस्मृतिः - पुण्यमय सुमिरणवाली ॥ १८॥

अनीहाऽनियमाऽनादिमध्यान्ताद्भुतदर्शना ।
अजेयाऽकल्मषाऽकारवाच्येत्यवनिपोत्तम ! ॥ १९॥

अष्टोत्तरशतं नाम प्रोच्यतेऽस्या महर्षिभिः ।
पठतां प्रत्यहं भक्त्या काऽपि सिद्धिर्न दुर्लभा ॥ २०॥

१०२ अनीहा - पूर्ण काम होने के कारण सभी प्रकारकी चेष्टाओंसे रहित ।
१०३ अनियमा - भाव-गम्य होने के कारण किसी भी जप, तप, आदि साधनसे प्राप्त न होनेवाली तथा भगवद्-प्राप्तिकारक साधन-स्वरूपा ।
१०४ अनादिमध्यान्ता - आदि, मध्य, अन्तसे रहित पूर्ण ब्रह्म-स्वरूपा ।
१०५ अद्भुतदर्शना - परम आश्चर्यमय दर्शनवाली
१०६ अजेया - कभी भी किसीके द्वारा न जीती जा सकनेवाली ।
१०७ अकल्मषा - समस्त पाप दोषों से रहित ।
१०८ अकारवाच्या - भगवान् श्रीराघवेन्द्र सरकारके ही वर्णन करने योग्य ।
हे राजाओंमें श्रेष्ठ श्रीमिथिलेशजी महाराज! इस प्रकार महर्षियोंने इन श्रीललीजीके १०८ नामोंका वर्णन किया है, जिनका नित्य प्रति श्रद्धापूर्वक पाठ करनेवालोंके लिये इस त्रिलोकमें कोई भी सिद्धि दुर्लभ नहीं है ॥ १९॥ २० ॥

इति श्रीजानकी अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीजानकी अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

श्रीजानकी अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ।

अष्टोत्तरशतं नाम्नामपीदानीं तदुच्यताम् ।
भवद्भिः सानुकम्पं मे सर्वज्ञाः श्रुतिमङ्गलम् ॥ १॥

साधुं पृष्टं त्वया राजन् श्रव्यमेकाग्रचेतसा ।
अष्टोत्तरशतं वक्ष्ये नाम्नां परमपावनम् ॥ २॥

सीरध्वजसुता सीता स्वाश्रिताभीष्टदायिनी ।
सहजानन्दिनी स्तव्या सर्वभूताशयस्थिता ॥ ३॥

ह्लादिनी क्षेमदा क्षान्तिः षडर्द्धाक्षहृदिस्थिता ।
श्रीनिधिः श्रीसमाराध्या श्रियः श्रीः श्रीमदर्चिता ॥ ४॥

शरण्या वेदनिःश्वासा वैदेही विबुधेश्वरी ।
लोकोत्तराम्बा लोकादी रघुनन्दनवल्लभा ॥ ५॥

रम्यरम्यनिधी रामा योगेश्वरप्रियात्मजा ।
यज्ञस्वरूपा यज्ञेशी योगिनां परमा गतिः ॥ ६॥

मृदुस्वभावा मृदुला मैथिली मधुराकृतिः ।
मनोरूपा महेज्येज्या महासौभाग्यदायिनी ॥ ७॥

भूमिजा बुधमृग्याङ्घ्रिकमला बोधवारिधिः ।
फलस्वरूपा तपसां फणीन्द्रवर्ण्यवैभवा ॥ ८॥

नमस्या प्रियदृष्टिश्च धरारत्नं धरासुता ।
दिव्यात्मा दीप्तमहिमा तत्त्वात्मा जनकात्मजा ॥ ९॥

जगदीशपरप्रेष्ठा ज्ञानिनां परमायनम् ।
जगन्मङ्गलमाङ्गल्या जरामृत्युभयातिगा ॥ १०॥

चन्द्रकलामुखासाद्या चिदानन्दस्वरूपिणी ।

चतुरात्मा चतुर्व्यूहा चन्द्रबिम्बोपमानना ॥ ११॥

घनश्यामात्मनिलया गोघ्री गुप्ता गुहेशया ।
गेयोदारयशःपङ्क्तिर्गतैश्वर्यकृतस्मया ॥ १२॥

गमनीयपदासक्तिः खलभावनिवारिणी ।
कृपापीयूषजलधिः कृतज्ञा कृतिसाधनम् ॥ १३॥

कल्याणप्रकृतिः काम्या कल्याणी कामवर्षिणी ।
कारुण्यार्द्रविशालाक्षी कम्बुकण्ठी कलानिधिः ॥ १४॥

केलिप्रिया कलाधारा कल्मषौघनिवारिणी ।
ॐ शब्दवाच्या ह्योजोऽब्धिरुदितश्रीरुदारधीः ॥ १५॥

उदारकीर्त्तिरुदिता ह्युदारातुल्यदर्शना ।
इष्टप्रदेभगमना आदिजाऽऽह्लादिनी परा ॥ १६॥

आश्रितवत्सलाऽऽराध्या ह्यनिर्देश्यस्वरूपिणी ।
अद्वितीयसुखाम्भोधिरव्याजकरुणापरा ॥ १७॥

अनवद्याऽप्रमत्तात्मा अनन्तैश्वर्यमण्डिता ।
अमानाऽयोनिजाऽकोपा अविचिन्त्याऽनघस्मृतिः ॥ १८॥

अनीहाऽनियमाऽनादिमध्यान्ताद्भुतदर्शना ।
अजेयाऽकल्मषाऽकारवाच्येत्यवनिपोत्तम ! ॥ १९॥

अष्टोत्तरशतं नाम प्रोच्यतेऽस्या महर्षिभिः ।
पठतां प्रत्यहं भक्त्या काऽपि सिद्धिर्न दुर्लभा ॥ २०॥

इति जानकी अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Raman. M

Shri Janaki Ashtottarashata Nama Stotram
pdf was typeset on July 31, 2021

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*